

॥३८॥

॥श्रीरामकृष्णवित्यजग्ध्यायत्रारंभः॥



"Joint project of the Rajawade Samanvay Mandal, Little and the Yashwantrao Chavan Publisher, Mumbai."

११

श्रीमाहगणाधिपतयेनमः॥ तुल्सिसंतश्रोतभाविका॥ कविमुद्रारत्नपरिष्कृक॥ श्रोता
 देखोनिमंगाकृ॥ वकासोमकंश्मस्तपाङ्गेरा॥ १॥ तुल्हिबोधसमुद्रिंचिंमुकेंपविं॥ किं
 चैतव्यनजिंचिदिव्यवक्षत्रै॥ किवैरायथनियिंसुमनेविचित्रै॥ संतरपंविकाश्लिं॥ २॥
 निश्चक्रामकथामृतपत्रै॥ किञ्जानभरितपिकलिष्टत्रै॥ किंभजनपंथिंचिसरो
 वरै॥ संतरपंभूरहौ॥ हीं॥ ३॥ ज्ञेनदहनाकव्यमंजनपञ्जानत्रिभिरदेहकचे
 उकिर्ण॥ ज्ञेकामगजविहारकपंचान् नदहरकानानदहनज्ञेन॥ ४॥ किंरामविज
 यपंथवैरागरा॥ साहित्यैरत्नेनिधानिज्ञानरा॥ हैत्तुल्हिजंगिकारावरंवारा॥ कासया
 शिप्रार्थीवै॥ ५॥ कमठकोशिंचासुवासवरा॥ घेकासयासंगावेन्नमरा॥ राजहं
 साशिघेमुक्तचारा॥ जैसेकिमप्रार्थीवै॥ ६॥ शितकहोयचंडमंडका॥ कासयासं

॥४०॥३॥

(२८)

गावेंवेक्षेवक्षे॥मित्रासप्रकाशजागका॥पटिंकासयास्त्रणावें॥७॥संतोशिधराक्षे
माशाति॥जैसेवेदेतोमंदमति॥त्रेमकाशिकाभक्ति॥सांगावेंहेचिनवला॥८॥
जैसेपंडिततुल्लिज्ञानसंपन्न॥करासुरमरमकथाअवणा॥तेंसर्वदाहृणतांदु
षण॥वक्तेयाशिज्ञारेत्सं॥९॥जसेसुवा धर्माइकथानिश्चीति॥संगितलिरावणा
चित्सति॥कोशाल्यादशरथबयोध्यति॥नेत्रुनविधिनेस्थापिलि॥१०॥सुर्य
वंशभुषणजङ्गुत॥जयोध्यापतिराजाहृरप्या॥जाम्बिपहरणिविरव्यात॥कुञ्ज
छबहुतकोशाल्या॥११॥सुमित्राकैवल्लभवंता॥होधिविरावदशरथ॥अनि
कसालशतंप्रणिपाता॥भोगांगनासुंदरा॥१२॥ज्ञानकावाकोशाल्यासति॥सु
मित्राकैवल्लसङ्गति॥कैकैतेकपटप्रहृति॥रजतमयुक्तसर्वदां॥१३॥केवल

३

१२

कु विवेषुर्तिमंता॥ लोचिजपाकसुलदशरथ॥ जोपरमयोध्यारणपूष्टित॥ धनुर्विहस
 वैज्ञाण॥ १४॥ बीधारा माडि शब्दउटला॥ तथेंविवाण मारिभवनित॥ अन्यस्याचिको
 शल्यता॥ विरदशरथा भैसानसे॥ १५॥ परियोरिनसेपुत्रसंलान॥ याकरितांराङ्गेन्द्रउ^{१५}
 द्विष्ठा॥ पुत्रेंविष्णुन्यसहन॥ बोलतिशास्त्रज्ञपतित॥ १६॥ शारिरव्यर्थप्राणविष्ण॥ ला
 सप्त्याविष्णपंचवाण॥ दयेविष्णव्यर्थज्ञान॥ शंतिवांचुनिवैराण्य॥ १७॥ संपत्तिज्ञे
 शिधर्मेविष्ण॥ पंडितांवाचुनिसभाशु^{१७} करहणिविष्णव्यर्थज्ञान॥ दियेविष्णसह
 नांडोवि॥ १८॥ वेदांतज्ञानावांचुना॥ कारडिविष्टतिज्ञेशिशुन्य॥ कांससात्रावांचुनि
 दान॥ किंस्त्वंहेविष्णवंधुज्ञासे॥ १९॥ किंज्ञोक्तविष्णवापिका॥ किंन्द्रयेविष्णनारहेखा॥
 किंनासिकाविष्णमुरवा॥ शोभाज्ञेशिनयेत्ति॥ २०॥ किंफकेविष्णतसवर॥ किनामस्म

॥३०॥३॥

(३१)

रणेविणमंहिर ॥ त्वैसेपुत्रेविषवैशब्दंपवित्र ॥ सर्वथाहिनकृचि ॥ २७ ॥ जैसाराजा
दशरथ ॥ संततिलाङ्गं चित्ताक्रात ॥ सदांविषिनगरुनहिंडत ॥ मिसमगयेचेंक
रोनियो ॥ २८ ॥ नावउद्धत्रसिंकासन ॥ जावउमाबन्नातुयेगायन ॥ वहुतकेलेप्र
यन्न ॥ परिसंताननकृचि ॥ २९ ॥ लोद्धापथं स्वन्पदेश्विले ॥ होघेपुरषजापण
वधिले ॥ भाषियेकेस्त्रियेशिमारि ॥ ३० ॥ उपसाधंविणतवता ॥ २३ ॥ गजबजो
निउटिलादशरथ ॥ कोणांशिनवारुभवता ॥ वशिद्युहाशिजाउनिलरित ॥
नमोनिनिस्वप्त्तसांगत्तस ॥ २५ ॥ गुरस्मणवारदुरुस्वप्त्त ॥ तिनश्वापदेयेईवधो
न ॥ मगायाचिशांतिकरन ॥ होषदुरकरवे ॥ २६ ॥ गुरजाइनेमगयेशि ॥ राजें
इनिघालालेदिवशि ॥ वासरमणिगलाभस्ताशि ॥ परिश्वापदनसांपड ॥ २७ ॥

१३॥

०

पड़लाज संतमधः कार॥ येकलाहिंडे नपवर॥ धनुष्माशि लाउनिझार॥ शोधिकं
लारते थवो॥ २८॥ तोयेकासरोवरा चेतिरिं॥ राजागुसंबैसे वह्सावरी॥ कानाढि
वोदुनते अवसरी॥ किणिजैके सांचक॥ २९॥ तोलेण मार्ग आवण॥ भाला माय
बापघेउन॥ हिवसाबहुल बाधि तउष्ण॥ घणोनिरात्रिगमनकरि॥ ३०॥ दोधंर
ध्यें खंदिंघेउन॥ आवैतिर्थहिंडे महिन॥ तासरोवरा चेतिरिंयउन॥ उभा
राहिलानावक॥ ३१॥ तोंतेवृथं लण ता वण॥ भास्माशि करविंउदकपानय॥
जैकलाजैशि यावचना॥ कावटिरवत् टविल॥ ३२॥ हातिं कुमंडलघेउन॥ ३३॥
डिवनि प्रवेशलाओ आवण॥ हशरध्यें सांचक जैकोन॥ निर्वाणवाण सोडिल॥ ३४॥
सपह्सं बाण हर्दई बैसका॥ हातिं चाकुमंडल खालें पड़ा॥ देहमुमिवरि पडिल॥

॥४०॥३॥

(6A)

त्राण चालि काआवणा चाऽऽित् ॥ स्वप्ने कोणा सज्जास्या चावण ॥ करित बाला नाम स्मरण ॥
हृदयनि माले संपुर्ण ॥ केले पावन मज्जकाणि ॥ अजे कतां मनुष्या चेवचन ॥ नृप डवचि
जालाधां वोन ॥ तव लोपउ रुसे आवण ॥ राम स्मरण करित विऽदिष्ट ॥ मगहृष्णे कर्म पा
प करि ॥ हृस्यापउ लिहे मज्जवरि ॥ आवण हृष्ण रायान करि ॥ रेवह कंहि सर्वथा ॥ ४०॥
मालिं माय वापें दृष्ट्यं दिन ॥ त्यंशि कर वंडु नृष्टपान ॥ मगामि सोडिन जाप कात्राण ॥
स सज्जाण राङै द्रा ॥ ५७ ॥ हो द्यं दृष्ट्यं अल्ल तरहि ॥ ल्यों चेशे विशि कोणि नहि ॥ हृशरथ
गैवरला हृदृढ़ ॥ शोका कुक्किल जाहाल्ला ॥ ५८ ॥ आवण हृष्ण हृशरथा ॥ उदक दो धां पा
जुनै खतं ॥ मगहृसों गविवार्ता ॥ नाहिल रिजिव त्यागिति ॥ ५९ ॥ उदक नेतां अयोध्या रा
ण ॥ दृष्ट्यं हृष्ण तिबार आवण ॥ तव लोन बोले वचन ॥ कंहि केलि या सर्वथा ॥ ५१ ॥

त

(5)

॥४॥

कारेश्वरणनबोलशि ॥ उदकमागितलेंयं कुडनिशि ॥ बोरस्त्रणोनिकोपरुशि ॥ शिष
 लाशिरपाउसा ॥ ४२ ॥ उदयाच्छक्तिमावक्षमित्र ॥ शोषसंतिलभुज्ञार ॥ तिवृत्तापेलरोहिणि
 वरा ॥ सहौक्रोथजपुमात्रनयेतुलें ॥ ४३ ॥ जैसेंगगच्येनिमेकजिवन ॥ लैसंश्रावणातु
 झेमन ॥ ताकुयाकारेनबोलशिववन ॥ राजा जैकानिगैवरा ॥ ४४ ॥ मगज्जराजपुत्रबो
 लिला ॥ प्रजवन्धिततोश्रावणमरिल ॥ तवतीहुधरणिवरिटाकिल ॥ त्रायजाठा
 कोसाविस ॥ ४५ ॥ ज्ञाटउनिश्रावणाचे ॥ दोद्यंज्ञाक्रेहतिदिववहन ॥ जैसापुत्रहु
 त्रिभुवन ॥ शोधितांहिनसंपेड ॥ ४६ ॥ ताहुरपुत्रश्रावण ॥ हाहागेलेनिधान ॥ ज्ञामु
 चेजातालिप्राय ॥ श्रावणवदनदाविंका ॥ ४७ ॥ याब्रस्त्रांडमउपाओत ॥ श्रावणजै
 सानहिपुण्यवंत ॥ जैशिवैकुटआणिलक्षुकोत ॥ भिनाथ ॥ लैसाजाविलमातापिता ॥ ४८ ॥

॥आगच्छा॥

(३४)

जोबकरमात्रपित्रभजन॥ लकोत्यन्तेंवहज्ञान॥ तोशडशास्त्रंजालापठोन॥ त्याचे
 हर्षननकूवें॥ ४१॥ त्याचेंजपतपउनुष्णन॥ दानजाध्यायनश्रवणमनन॥ कक्षाचातु
 र्यवर्थज्ञान॥ जैसेभाषणमव्यपियाचें॥ ४२॥ तणजेझ्याशिल्माचौसद्विकळा॥ त्याबव
 घियाचिल्माविकळा॥ जयाशिमातापिति याचाकेटाळा॥ त्याच्याडाळानशिवावें॥ ४३॥
 मालापितागुरहेवज्ञाण॥ चारिदेवतेसगसमान॥ साचिपरमज्ञाताज्ञाण॥ नमोडिवचन
 श्रेष्ठाचें॥ ४४॥ त्यणेनिपुत्रयेकआवण॥ आटउनितयाचेगुण॥ होघेंपडतमुर्छायेउन॥
 जावयात्राणयेकवटला॥ ४५॥ मगआपदलित्राणजाता॥ हृष्णलितुहिंपुत्रपुत्रकरिंता॥
 त्राणजाउंदेलुज्ञाहशरथा॥ आमुच्याजैसातात्काळा॥ ४६॥ मगतीहिंसेडिलात्राण॥ रायें
 लिघाचेंकेलेहहन॥ उतरकार्यसंपादुन॥ अयोध्येशिपातला॥ ४७॥ मनातहर्षमानिन्दपवर॥

The Kalyanachandrika was written by Jayadev in the 12th century AD. It is a Sanskrit work containing 1000 stanzas. The manuscript is handwritten in Devanagari script on yellowish paper. The text discusses various aspects of Hinduism, including philosophy, ethics, and mysticism. The author uses a variety of literary devices such as alliteration, rhyme, and metaphor to create a rich narrative. The manuscript is a valuable historical and cultural artifact, providing insights into the spiritual life and literary tradition of medieval India.

६

॥५॥

मजआपजालालोकेवक्षवरा। सान्याआयेतग्गुत्र॥ होकंसत्वरमजलगिं॥ ५५॥ अयो
 अशियेउनिद्वरथ॥ बशिखुशिसोगेवतांत॥ पुदेंदादशवर्षपीरयंत॥ दुष्काळपउडा
 पर्षिववरा॥ ५६॥ कहापिनवर्षेवाहका॥ अस्तेततिवतापेजर्क॥ आव्यश्चणिवनस
 केढिक॥ नाहिनिहुकपर्थीवरा॥ ५७॥ गर्डिव्रह्मणपिडिलेवहुत॥ हैत्यगुरकायझार
 ट्यवेत॥ लेणेहुकहुआकर्षिलासमस्त॥ ५८॥ होहेयेकास्तहेउनेहि॥ ५९॥ दृष्टिलालिया
 पुणा॥ सुखिहोतिलगोब्राह्मण॥ तेकारेतिलमाहायह्य॥ सुरवरांसपुर्णवंकलेण॥
 ॥५०॥ दृष्टपवीहैत्येत्थोर॥ साशिसाहुकाम॥ जालाशुक॥ विहृपभारासहितशक॥
 युध्यकरेतदेसशिं॥ ५१॥ वहुतदिवसज्जालासंप्राम॥ परिशुक्रकृपटिपरम॥ मेघव
 र्षोनेहिबधम॥ शक्तिनिताक्रात्तपेजाला॥ ५२॥ वज्जधराहिस्त्रणेब्रह्मसुल॥ ५३॥

॥५॥

जयोध्येनाराजादशरथ ॥ लोकतापबकेरणपंडित ॥ देसजिंकिलह्यणमात्रे ॥ ६३ ॥ मगमा
 सुक्षिखाणिनिजरथा ॥ मुक्तपारविलेवशरथा ॥ मालुक्तसंगेसमुक्तवातो ॥ जनारदिकारण
 ज्ञे ॥ ६४ ॥ जैकोनिदेसद्रतापबद्धुत ॥ लान्काकरयिंवैसलादशरथ ॥ लोकैकेरायाशित्रि
 यजस्तंत ॥ कायबोलततेभवां ॥ ६५ ॥ मिसमागमेयईन ॥ संग्रामलुमचापाहिन ॥ राजा
 स्थणलुंसकुमारपुणे ॥ युध्यकंदनतेस्थान ॥ ६६ ॥ येरस्त्रणलुलिजवद्विजसतां ॥
 मंजस्यनहिंसर्वथा ॥ जैसंतीचंवा ॥ याकत्तावेत्तलिरथावैरतेभवां ॥ ६० ॥ निरा
 कमाँतेवेक्ति ॥ येउनिजालच्यपक्तमातुक्ति ॥ दवदेस्याचेरणमंडक्ति ॥ रथजकस्मातउ
 त्तरिला ॥ ६८ ॥ वैकुटाहुनिवैनतासुता ॥ हिराव्यीत्तिउत्तरेजकस्मात ॥ त्तैसाराजा
 दशरथ ॥ समुदयातउत्तरला ॥ ६९ ॥ अजपुत्रदेवानपाकशासन ॥ दत्ताजालह्येमजा

Digitized by srujanika@gmail.com

(8)

॥६॥

२

लिंगन॥ दशरथेऽध्यनुष्ठन्तुन् उन॥ उभाटाकलायुध्याशि॥ ७०॥ वाणापाटिवाणसेडिला
 जैसेत्राब्दा मोगंशब्द्येत॥ किंमेघधारावर्धता॥ शरसोडिलयेरति॥ ७१॥ जैशमेघो
 वाहुरनिघोनि॥ निवडतिकन्माल सोहमिनि॥ लैसावाणतुणिरातुनि॥ निवडुनि
 काटिदशरथ॥ ७२॥ दैत्यांचिशिरं जृकस्मात्॥ गगनिउडनिअसंरव्यात्॥ जैसेर
 क्षावरनिपस्तिउडता॥ प्रभातकाँक्येकदाच्या॥ ७३॥ माघारलैदैत्यभारगतेकं॥ तों
 पुटेंजालावघपवा॥ कपडेककायुध्यमाता॥ नानाप्रकारेदावित॥ ७४॥ परिदशरथस
 मर्थ॥ कापट्यविद्यानचलेतथा॥ जैसमुसन्नचेवाङ्गाक्षमता॥ उठेदिपंडितयेकाशब्दे॥ ७५॥
 जैसामंत्रवादिप्राहामति॥ सापुटेंभुलैचलानचालति॥ तैशादशरथापुटेंयुध्यगति॥ ७६॥
 कदानचलतिलयांन्मा॥ ७७॥ देखेनिदशरथाचाप्रतापतेका॥ विरथजालावघपवा॥

(३४)

पाटिदेउनितेधवं॥ निघताजालासवेग॥ ७४॥ घुसेंशिंपिलावैश्वानरा॥ तैसाक्रोधायमान
 जालाशुक्र॥ रथ्यंबैसेनियाशर॥ सोडिलाजालाप्रतापे॥ ७५॥ जातवेदास्त्रतेजवसरि॥ सो
 डिलाजालादेवांवरि॥ अयोध्याधिश्चंस्तुकी॥ जकद्बस्त्रप्रेरिले॥ ७६॥ शुक्रवातास्त्र
 प्रेरिता॥ भज्जत॥ येरेजाडघातलापवेत॥ वालकोडिलासमस्त॥ दैत्यगुरनेदेखिले॥ ७७॥
 मगसोडिलेवज्जास्त्र॥ पर्वतफोडिलसमग्र॥ माहशरथेंसोडिलेमहश्वर॥ देखवनिवज्ज
 जास्त्रविराले॥ ७८॥ शुक्रपरमक्रोधायमान॥ कठिलायकनिर्वाणवाण॥ रथाचाजांख
 छदुक॥ टाकिताजालालेधवं॥ ७९॥ जास्त्रदेहितांजकस्मात॥ रवालेपउवाजोहश
 रथ॥ कैकैलेहस्वानिधावत॥ घालोनिजांखधरिला॥ ८०॥ पर्वताकाररथधोर॥ दंडव
 रिश्वारघेललासमग्र॥ विरश्रीयेनेन्पवर॥ समाचारनणतो॥ ८१॥ दृशरथेंसोडिलनि

(8)

॥७॥

वीणवाण॥ तोडिलाकविचास्यदन॥ अच्छासहिततुकउकरन॥ रणमंडिपाडिला॥ ५॥
 विरथजालानुक॥ दशरथेंकाटिलासुर्यमुखशर॥ स्त्रेयन्विदेहिनशिर॥ कापटयमु
 स्वासहितपै॥ ६॥ मागुलिविचारेजङ्गदन॥ शक्तेहिकेवक्षब्राह्मण॥ याचारक्षुनि
 योग्राण॥ मुगुटप्रात्रछेदाव॥ ७॥ बिमष्यबलगसांगेलावाण॥ मुगुटपाडिलातक्षिष्ठेदु
 न॥ भयमितभगुनेदन॥ पक्षसाजालानेश्वरां॥ ८॥ देवकेरितिजयजयकार॥ पक्षों
 लागलेहेत्यभार॥ डोसामाहावातसुटनासमग्र॥ भुसउडेबरिं॥ ९॥ रायेंकोहउशि
 घाललिगवसणि॥ तुणिरटेविलाजावरणदालुनि॥ डोसांकुंडामाजिहेदिष्प्यजग्नी
 जाधादितयाजिक॥ १०॥ दशरथपाहसावधान॥ तोकेकेनेहस्तघालुन॥ धरिलाजसे ॥११॥
 स्यदन॥ वर्तमानकवलेंले॥ १२॥ जाश्वीर्यकरिनपवरा इक्षादिपाहातिसुरवर॥ जाह्नवी

॥आ०।३॥

(४८)

जयलाभसमग्र॥ कैकैनेहिथला॥ १२॥ डैसंघरपउतांजकस्मात्॥ निजबकेंउचलि
तवक्षवेत्॥ लैसाकैकैनेज्ञाजिरथ॥ सोवरिलारणांगणि॥ १३॥ खालेंउतरोनिहशरथ॥
घ्रियेनांगि आकंगित॥ घणेदोनवरमागवरीत॥ जोकोजापेश्चित्तजस्तिल॥ १४॥ कैकै
आनंहलिथोर॥ ह्यणेमिमागेनजेकावर॥ लक्ष्मामज्ञावेसत्वर॥ ह्यणोनिजापघेतस्मि॥ १५॥
माहायुष्मिंडयपुर्ण॥ कैकैशियावधास काय कारण॥ कायहोतेतिसवरदान॥ तेजि
कथनभैकायै॥ १६॥ पित्रप्रहिकैकैज्ञाता॥ यक्तापशिज्ञालाजनचिता॥ तयाशित्रा
र्थुनमाता॥ राहावितिजालिकैक्षिय॥ १७॥ रथबेसलाजनुद्यनाते॥ मातानिरोपिकै
केले॥ उपकर्णसामग्रिलागे लयथें॥ सिध्धकरनिर्दिले॥ १८॥ पुष्पद्युपदिपबारलि॥
सिध्धकरनदलकृष्णप्रालि॥ येरप्राणायामकरनिनिश्चिति॥ ध्यानिजालानिमग्न॥ १९॥

(9)

॥८॥

तोंकैकैनेव्युनिमस।।लाविलिक्रूषिच्यामुखास।।ध्यानजलियातोंमाहापुरुषा।मुख
 स्वकरेपुश्चितसें।।१००।।तोहस्तालागलेकोळे।कर्लुखकुमारिचेक्कलेण।क्रूषिनेआ
 पिलेलेवेक्क।वदनकाकेंसुझेहोकां।।३।।तुजवीजपश्चयैर्लघुच्छ।जगातहोईलका
 केतोंड।पुत्रेद्यमकरिलिलउहु।नसत्तेवेडवाढविशि।।४।।मातेबेसमाज्ञारब्जेकोन।।
 वैगथरिक्रूषिच्चरण।स्वामिकैकैबाबुज्जान।नणोनिकर्महेंकेले।।५।।कांहिंद्यावें
 डिवरहान।मगक्रूषिबोलेछुपाकुहुआउ।।६।।योहुपतिलाएुन।जयहेईलमाहारण।।७।।
 मज्जपुज्जासामप्रीहिधठिसमस्त।तरित्तुहुरुहुर्गुर्लघुच्छित्र।येशवंत।सावरेयास ॥८॥
 मईअज्जुत।जयप्राप्तकैकलेण।।८।।बसोईडब्बाणिबहस्पति।येशहशरथाचेवानि
 ति।वस्त्रेंभुषणेंबसरपति।देवाज्जालारायातें।।९।।वस्त्रेंभुषणेंबज्जुत।दिव्यमणिदिथलि

॥१३॥

१४

कैकैते॥ येरिनेघातलावेणिते॥ परमप्रकाशवंतज्ञो॥ ७॥ लोदेवजान्यर्थोबोलेवन् वन्॥
रायाशिकायबाहुपुत्रसंतान॥ दशरथस्यापुत्रवदन॥ नाहिंदखीलेजयापि॥ ८॥ सुरग
सह्यणरायाविरस्या॥ त्रिभुवनपतियेर्डलनुज्योपाटा॥ इच्छानलागलेनिककंटा॥ स
नकंदिकोभक्तकंशि॥ ९॥ ज्ञोमायाच्छक्रन्वाक्॥ अंबतत्रस्यांचानायक॥ ज्ञोकमको
इवाचाडनक॥ लोपुत्रदेखतुजराया॥ १०॥ ज्ञोवदशास्याच्छिक्षर॥ ज्ञोअदिमायेचनि
जवर॥ ज्ञोपुराणपुस्थञ्जगच्चर॥ तुझत्रहर्डलराया॥ ११॥ विभांडिकाचापुत्रश्रंगऋषि॥
हुरणिगर्भसंभुतलेज्ञोराशि॥ त्याशिज्ञाणावेनानासायांशि॥ पुत्रईश्विकरावया॥ १२॥
त्यासनाहिंमनुष्मदर्शन॥ देखिलेनाहिंस्त्रियेचेवदन॥ शब्दविषयेमोहन॥ कल
निगायनज्ञाणावा॥ १३॥ शक्तेदेउनिदेवललना॥ पारवामातयावना॥ रंभाउर्बशित्रुभानना॥

॥१॥

१०

द्यान्यागायनामहनसुरे॥१४॥ हशरथेऽगुरचिजाजा॥ घेउनिजालाअयोथासु
 वना॥ आनंदजालासकङ्गना॥ प्रजव्यवरणीजालि॥१५॥ असंभाव१पिकुलिज
 वनि॥ दुष्काङ्गलामुक्तिहुनि॥ डैशिविष्णुसहश्रनामेकरनि॥ माहापापेसंका
 रति॥१६॥ ईकडेविणायाकमरंग॥ शङ्खरकिंकिणितुपांग॥ देवांगनाघेउनितुप
 जोग॥ वनाशिगलियासत्वर॥१७॥ विभांडिकमधितपोथन॥ निसत्रातःका
 किंतुटोन॥ करावयाअनुस्तान॥ डेवकवितिराप्रतिजाय॥१८॥ मांजाश्रमि
 येकलपुत्र॥ उचबांधेनियांगोपु॥ सदरश्चंगि तोपरमचतुरा॥ वेदाध्यायन
 करितस॥१९॥ गजव्यात्रसावजेंबहुत॥ हरवतेंहायतोभयाजित॥ धणा ॥२०॥
 नितुचस्थकबांधोनिसत्य॥ त्यावर्गसुतवैसविला॥२१॥ विभांडिकजनुष्य

"Joint Project of the Rajiv Gandhi Sanskrit University, Deemed to be a Central University and the Yashmeemitra Gyanpeeth, Mysore"

॥३०॥

(१०८)

नकरैनदोप्रहरायेतपरतोन॥ परमआनेपुत्रेहरेवोन॥ जाध्यायनसंगेयालें॥ २१॥
न्यागिवेदमुखद्वादश॥ सकलशास्त्रंपारोगत॥ यागविधिड्यासमस्त॥ करतकामकजे
यालें॥ २२॥ असेविभांडिकेलास्नाना॥ तोंसुमयपाहुनेवांगना॥ वेणिंपातन्यातया
बना॥ सर्वसंपत्तिधेउनि॥ २३॥ वरिवेसलात्राषिब्दन॥ तवतेहिंजारंजिलेगायन॥ जें
जेकतांभुलेपंचवाण॥ स्वरूपलावप्यत् याच॥ २४॥ जैशाकेवठसौहामिनि॥ मंडितदिस
तिवरुंगाभरणि॥ इंचिंस्वरूपेपाहुनि सधापाणिभुठेले॥ २५॥ राकम्हंगसुस्वरा
गायनजेकोनिरुषिपुत्र॥ वरुनिपोहसाहरा॥ स्वरूपसुंदरन्याहकित॥ २६॥ लवनेत्रकृ
स्तहावभाव॥ हावितिनानालाघव॥ श्रुणिवेहरवतांचिजपुर्व॥ भयवाटमनाहि॥ २७॥
गायनजेकतांसुस्वर॥ संतोषवाटजपार॥ लघणेमज्जरावयासाचार॥ पातलेको

(१)

१९०॥

एनकँहें॥२८॥भयेकरनितेवेका॥श्रंगावायुवेणिंपञ्चला॥सबेचिविलोकि परतोनि
तोका॥सुद्धरस्वरपेतयांचिं॥२९॥विभांडिकजनुष्णनकरन॥आश्रमाशियेतपरतोन॥
तोदेवागनागेलियातेथुन॥आपभयेन्द्रधिंन्मा॥३०॥स्वणेविभांडिकाशिहेकुक्केलै॥
तरिजात्ताशिश्रापिलतात्काका॥यालाणि दोनप्रहरसत्वर॥जालिलेरेकरोनियां॥३१॥
असेपिताजारुजाश्रमाशिं॥श्रंगरसात्त्वापाशिं॥ह्यणेयेथेजोलेहोतेतापशि॥३२॥
पमाजाशिजसेना॥३३॥मितयांशिदेखेनि॥पक्कालोदेहलोभेकरनि॥आतांतेनये
लिहुसरेनि॥खेतिमनिवाटतसे॥३४॥विभांडिकल्यणपुत्राशि॥जरिआश्रमाजोले
संतत्रधिं॥तरिजापणजातिथ्यकरावेसंशिं॥पुजाविधिकरनियां॥३५॥असोत्रा
तःकाळिविभांडिकमुनि॥गेलाजनुष्णनालागुनि॥श्रंगाचिताकरिमनि॥ह्यणेकैन

१९१॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com